

योएल की पुस्तक और लाओदीकियाई सेवन्थ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया - संख्या छियालीस

Jeff Pippenger

2026-02-12

संख्या छियालीस

कैसरिया फिलिप्पी से कैसरिया मारीतिमा तक का कालखंड तीसरे से नौवें पहर की अवधि का प्रतिनिधित्व करता है, और उसका विभाजन छठे पहर पर होता है। कैसरिया से कैसरिया के उस क्रम का विभाजन-बिंदु रूपान्तरण-पर्वत था। रूपान्तरण-पर्वत अन्य दो रेखाओं को तीन चरणों वाले उस मार्गचिह्न के साथ संरेखित करता है, जो पेन्तेकोस्त के रविवार-कानून से पाँच दिन पूर्व स्थित है।

पर्वत पर, परमपिता परमेश्वर ने दूसरी बार वाणी की। पहली बार उन्होंने मसीह के बपतिस्मा के समय वाणी की थी। अंतिम बार उन्होंने क्रूस के ठीक पूर्व वाणी की।

अब मेरी आत्मा व्याकुल है; और मैं क्या कहूँ? पिता, मुझे इस घड़ी से बचा ले; परन्तु इसी कारण मैं इस घड़ी तक आया हूँ। पिता, अपने नाम की महिमा कर। तब स्वर्ग से एक वाणी आई: मैंने अपने नाम की महिमा कर दी है, और फिर करूँगा। इसलिये जो लोग वहाँ खड़े थे और यह सुन रहे थे, उन्होंने कहा कि गर्जन हुआ; और कुछ ने कहा, एक स्वर्गदूत ने उससे कहा। यूहन्ना 12:27-29.

परमेश्वर अपने नाम को तब महिमामन्वित करता है जब वह एक लाख चवालीस हजार पर मुहर लगाता है और उन पर अपना नाम लिखता है।

जो विजयी होगा, उसे मैं अपने परमेश्वर के मंदिर में एक स्तंभ बनाऊँगा, और वह फिर कभी बाहर नहीं जाएगा; और मैं उस पर अपने परमेश्वर का नाम, और अपने परमेश्वर के नगर का नाम, जो नया यरूशलेम है, जो मेरे परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से नीचे उतरता है, लिखूँगा; और मैं उस पर अपना नया नाम लिखूँगा। जिसके कान हों, वह सुन ले कि आत्मा कलीसियाओं से क्या कहता है। प्रकाशितवाक्य 3:12, 13.

रूपान्तरण के पर्वत पर पतरस, याकूब और यूहन्ना ही केवल शिष्य उपस्थित थे, जैसे कि वे याइरुस की कन्या के पुनरुत्थान के समय, और फिर गेथसमनी में भी थे। गेथसमनी—यूहन्ना बारह में पिता के बोलने के समान—क्रूस से ठीक पहले घटित हुई। 'गेथसमनी' का अर्थ 'तेल का कोल्हू' है, जो कुँवारियों की 'तेल-परीक्षा' को चिह्नित करता है। गेथसमनी वह 'संकट' है जो आत्मा को 'मृत्यु के आमने-सामने' ला खड़ा करता है, और बुद्धिमान कुँवारियाँ यह परीक्षा उत्तीर्ण करती हैं, क्योंकि 'दूसरी मन्दिर-परीक्षा' में वे जीवन के आमने-सामने आ गईं, जैसा कि यीशु ने तीस दिनों तक 'आमने-सामने' शिक्षा दी।

पहली बार पिता ने मसीह के बपतिस्मा के समय वाणी की, और पहली बार मसीह ने केवल पतरस, याकूब और यूहन्ना को तब साथ लिया जब याइर की बारह वर्षीय बेटी का पुनरुत्थान हुआ। बारह वर्षीय कुँवारी का पुनरुत्थान मसीह के बपतिस्मा के साथ सुसंगत है, जो पुनरुत्थान की सामर्थ का प्रतीक है। याइर की बेटी का पुनरुत्थान मसीह के बपतिस्मा और कैसरिया-फिलिप्पी के साथ सुसंगत है। गेथसमनी, और क्रूस से ठीक पूर्व जब पिता ने वाणी की तब मसीह की व्याकुलता, कैसरिया मरिदिमा के साथ सुसंगत हैं।

रेखा पर रेखा के सिद्धान्त के अनुसार, पतरस उन एक लाख चवालीस हजारों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन पर कैसरिया फिलिप्पी में—जब शमौन बर-योना का नाम बदलकर पतरस रखा जाता है—मुहर लगती है। पैनियम, जो कि कैसरिया फिलिप्पी ही है, में एक बार मुहरबंद हो जाने पर, पतरस पर्वत के छठे घंटे पर जाता है, जहाँ वह पताका के समान ऊँचा उठाया जाता है, और वह कैसरिया मारीतिमा में कुरनेलियुस के बुलावे का उत्तर देने के लिए आगे

बढ़ता रहता है। कैसरिया फिलिप्पी में पतरस परमेश्वर की मुहर और मध्यरात्रि की पुकार का संदेश लेकर उसे प्रचार करने के लिए एक्सेटर कैम्प-मीटिंग से निकलता है। तुरहियों के पर्व द्वारा निरूपित इस्लाम का संदेश पतरस को समुद्रतटीय कैसरिया तक ले जाता है। इस्लाम का संदेश पतरस को संसार की दृष्टि में ऊँचा उठाता है, क्योंकि पतरस ने तुरहियों के पर्व से पहले ही इस्लाम के भविष्यद्वाणीगत आगमन का पूर्वकथन किया था।

देखो, यहोवा के उस महान और भयानक दिन के आने से पहले मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ता एलिय्याह को भेजूँगा; और वह पितरों का हृदय पुत्रों की ओर, और पुत्रों का हृदय उनके पितरों की ओर फेरेगा, कहीं ऐसा न हो कि मैं आकर पृथ्वी को शाप से मारूँ। मलाकी 4:5, 6.

रेखा पर रेखा, एलिय्याह का संदेश वह संदेश है जो पिताओं को उनकी संतानों के साथ संरेखित करने की धारणा पर आधारित है। एलिय्याह पिता मिलर थे, जो अपनी संतानों का प्रतिरूप प्रस्तुत करते थे। एक लाख चवालीस हज़ार विलियम मिलर की संतान हैं, और मिलर का हृदय अपनी संतान की ओर फेरना, मिलरवादी इतिहास को एलिय्याह के इतिहास के साथ, तथा बपतिस्मा देनेवाले यूहन्ना को एक लाख चवालीस हज़ार से सम्बद्ध दूत के साथ, संरेखित करना है। इन चार रेखाओं के संरेखण का एक तत्व यह है कि एलिय्याह, यूहन्ना और मिलर की परीक्षा के इतिहास में वर्तमान सत्य का एकमात्र संदेश वही था जो दूत के माध्यम से आया।

और गिलाद के निवासियों में से तिशबी एलिय्याह ने अहाब से कहा, “इस्त्राएल का परमेश्वर यहोवा, जिसके सम्मुख मैं खड़ा रहता हूँ, उसके जीवन की शपथ, इन वर्षों में मेरी वाणी के अनुसार ही ओस या वर्षा होगी; अन्यथा न ओस पड़ेगी और न वर्षा होगी।” 1 राजा 17:1

बहन व्हाइट स्पष्ट रूप से कहती हैं कि जिन्होंने यूहन्ना के संदेश को—जिसे यीशु ने एलिय्याह के रूप में ठहराया था—स्वीकार नहीं किया, वे यीशु की शिक्षाओं से लाभान्वित न होते; और यह भी कि जिन्होंने मिलर के संदेश को—जो प्रथम स्वर्गदूत के संदेश के रूप में निरूपित किया गया है—अस्वीकार किया, वे द्वितीय स्वर्गदूत के संदेश से लाभान्वित नहीं हो सकते थे। एलिय्याह की इस घोषणा के साथ कि वर्षा केवल उसकी आज्ञा से ही आएगी, एक परम परीक्षा भी संलग्न थी, जिसमें एलिय्याह के संदेश और बाल के संदेश के बीच चुनने की आज्ञा सम्मिलित थी। “कब तक” का भविष्यसूचक प्रतीक एलिय्याह के कर्मल पर्वत के प्रसंग को रविवार के विधान के साथ संबद्ध करता है।

तब अहाब ने समस्त इस्त्राएल को संदेश भेजा, और भविष्यद्वक्ताओं को कर्मल पर्वत पर एकत्र किया। और एलिय्याह सब लोगों के पास आकर बोला, तुम कब तक दो विचारों के बीच डगमगाते रहोगे? यदि यहोवा ही परमेश्वर है, तो उसके ही अनुसरण करो; परन्तु यदि बाल, तो उसके अनुसरण करो। परन्तु लोगों ने उसे एक भी बात का उत्तर न दिया। तब एलिय्याह ने लोगों से कहा, मैं, हाँ, मैं अकेला ही, यहोवा का भविष्यद्वक्ता रह गया हूँ; परन्तु बाल के भविष्यद्वक्ता चार सौ पचास पुरुष हैं। सो वे हमें दो बैल दें; और वे अपने लिये एक बैल चुन लें, और उसे टुकड़ों में काटकर लकड़ी पर रखें, पर नीचे आग न लगाएँ; और मैं दूसरे बैल को तैयार करूँगा, और उसे लकड़ी पर रखूँगा, और नीचे आग न लगाऊँगा। तब तुम अपने देवताओं के नाम से पुकारो, और मैं यहोवा के नाम से पुकारूँगा; और जो परमेश्वर आग से उत्तर देगा, वही परमेश्वर ठहरे। तब सब लोगों ने उत्तर देकर कहा, यह बात अच्छी है। 1 राजा 18:20-24.

कर्मल की कसौटी दो संदेशों में से चुनने की थी। यह सत्य और मिथ्या भविष्यवाणी के बीच, और दूत एलिय्याह अथवा ईज़ेबेल की मेज़ पर बैठने वाले भविष्यद्वक्ताओं के बीच की परीक्षा थी। यह दूत और संदेश के विषय में था। 1844 में, प्रभु ने ऐसी कसौटी स्थापित की कि कर्मल की पुनरावृत्ति हुई, जिसने मिलर को सत्य भविष्यद्वक्ता के रूप में, और मिलर के संदेश को ओस और वर्षा के रूप में प्रकट किया। सत्य भविष्यद्वक्ता और सत्य संदेश का, उनके विपरीत मिथ्या भविष्यद्वक्ता और मिथ्या संदेश से, जो भेद है, वह एक्सेटर शिविर-सभा में एक्सेटर के तंबू और वॉटरटाउन समूह के तंबू द्वारा दर्शाया गया। दो तंबू, जो सत्य को मिथ्या के विपरीत निरूपित करते थे। कर्मल पर किया गया वह भेद और 1844 का इतिहास कैसरिया फिलिप्पी में तब चिन्हित होता है जब पतरस पर मुहर लगाई जाती है और उसे एक ध्वज के रूप में पर्वत पर ऊँचा उठाया जाता है। उसे इसलिए ऊँचा उठाया जाता है क्योंकि उसने दावा किया था

कि उसका संदेश अन्तिम वर्षा का एकमात्र सत्य संदेश है। जब उसकी भविष्यवाणी पूरी हुई, तब वह ऊँचा उठाय़ा गया।

तुरहियों का पर्व पिन्नेकुस्त के काल में तीसरी तथा निर्णायक कसौटी है; और इस कसौटी से पूर्व पतरस यह इंगित करता है कि अर्धरात्रि की पुकार की घोषणा के आरम्भ को चिह्नित करने हेतु इस्लाम को मुक्त किया जाना है। भविष्यवाणी की परिपूर्ति ही वह तत्त्व था जिसने मिलेराइटों और प्रोटेस्टेंटों के बीच भेद स्थापित किया; प्रोटेस्टेंट उन पूर्व वाचा-जन का प्रतिनिधित्व करते हैं जिन्हें छोड़कर आगे बढ़ा जा रहा है। सत्य और असत्य के बीच का भेद प्रकट हो जाने पर एलिय्याह ने स्वयं झूठे भविष्यद्वक्ताओं का वध किया। यह भेद तुरहियों के पर्व पर स्थापित होता है, जब इस्लाम के विषय में की गई एक भविष्यवाणी की परिपूर्ति होती है।

मिलेराइट इतिहास की मध्यरात्रि की पुकार एक ऐसी भविष्यवाणी थी जिसे संशोधित किया गया और तत्पश्चात् पूरित हुई। यह 22 अक्टूबर, 1844 को पूरित हुई, जबकि मध्यरात्रि की पुकार के विषय में मिलर की मूल समझ वर्ष 1843 थी। सैमुअल स्नो उस संदेश में हुए संशोधन का प्रतिनिधित्व करते हैं, और उनका संदेश 'सच्ची' मध्यरात्रि की पुकार कहलाया।

सन् 1844 मिलर के संदेश और प्रोटेस्टेंटों के संदेश के बीच के भेद का एक चित्रण था। परख की प्रक्रिया में प्रोटेस्टेंट मिलर द्वारा वध किए गए, और तब वे धर्मत्यागी प्रोटेस्टेंटवाद—रोम की पुत्रियाँ, ईज़ेबेल के याजक—बन गए। यह भेद भविष्यवाणी के संदेश के स्वीकार या अस्वीकार के द्वारा प्रकट हुआ। यूहन्ना और मिलर के साथ, भविष्यवाणी के संदेश ने उन पूर्व वाचा के लोगों के मिथ्या संदेश को उजागर किया जो छोड़े जा रहे थे। एलिय्याह के संदेश ने यह दावा किया कि उसके वचन के अतिरिक्त वर्षा न होगी, और साढ़े तीन वर्ष बाद उस दावे की परख प्रकट होनी थी।

और ऐसा हुआ कि जब अहाब ने एलिय्याह को देखा, तब अहाब ने उससे कहा, क्या तू वही है जो इस्राएल को क्लेश में डालता है? तब उसने उत्तर दिया, मैंने इस्राएल को क्लेश में नहीं डाला; परन्तु तू और तेरे पिता का घराना, क्योंकि तुम लोगों ने यहोवा की आज्ञाओं को त्याग दिया है, और तू बाअलों के पीछे हो लिया है। अतः अब भेज, और सारे इस्राएल को मेरे पास कर्मेल पर्वत पर इकट्ठा कर, और बाअल के चार सौ पचास भविष्यद्वक्ताओं को, और उपवनों के चार सौ भविष्यद्वक्ताओं को, जो ईज़ेबेल की मेज़ पर खाते हैं। 1 राजा 18:17-19.

असत्य और सत्य के बीच का भेद—चाहे वह दूत से संबंधित हो या संदेश से—ऐसी परीक्षण-प्रक्रिया में किया गया जिसमें संदेश और दूत, दोनों के विरुद्ध आरोप सम्मिलित थे। एलिय्याह पर इस्राएल को क्लेश में डालने का आरोप लगाया गया, क्योंकि उसके संदेश के कारण वर्षा रुक गई थी। यदि इस्राएल में वर्षा होती रहती, तो एलिय्याह के विषय में कोई प्रश्न उठता ही नहीं। यह मुद्दा एलिय्याह की भविष्यवाणी और साढ़े तीन वर्षों के काल में उसकी पूर्ति पर आधारित था।

जब पतरस कैसरिया-फिलिप्पी की कसौटी पर होता है, जो तुरहियों का पर्व है, और वह भी वही स्थान है जहाँ गदहे को खोला जाता है, तब आधी रात की पुकार के संदेश का प्रारंभ चिह्नित होता है। एलिय्याह के समान पतरस ने अभी-अभी अपनी भविष्यवाणी की पुष्टि को देखा है, और सत्य तथा असत्य के बीच का भेद सबके देखने के लिए प्रत्यक्ष कर दिया गया है। उस भविष्यवाणी की पुष्टि का प्रतीक तुरहियों का पर्व है, जो वही कसौटी है। उस भविष्यवाणी का प्रकार 1840 और 1844 दोनों में मिलता है, जहाँ एक भविष्यवाणी सुधारी जाती है और तत्पश्चात् पूर्ण होती है। जोसायाह लिच की सुधारी हुई भविष्यवाणी ने 11 अगस्त, 1840 को प्रथम स्वर्गदूत के संदेश को सशक्त किया, और 1843 के वर्ष के संबंध में मिलर की भविष्यवाणी को स्नो ने सुधार दिया।

“1840 में भविष्यवाणी की एक और उल्लेखनीय पूर्ति ने व्यापक रुचि उत्पन्न की। दो वर्ष पूर्व, दूसरे आगमन का प्रचार करने वाले प्रमुख सेवकों में से एक, जोसियाह लिच ने प्रकाशितवाक्य 9 की एक व्याख्या प्रकाशित की थी, जिसमें उस्मानी साम्राज्य के पतन की भविष्यवाणी की गई थी। उसकी गणनाओं के अनुसार, यह शक्ति 11 अगस्त, 1840 को परास्त होने वाली थी... जब यह अपेक्षा की जा सकती है कि कुस्तुनियामें उस्मानी शक्ति भंग हो जाएगी। और मुझे विश्वास है कि यही सत्य सिद्ध होगा।”

“ठीक उसी समय, जो निर्दिष्ट किया गया था, तुर्की ने अपने राजदूतों के माध्यम से यूरोप की सहयोगी शक्तियों का संरक्षण स्वीकार कर लिया, और इस प्रकार अपने को मसीही राष्ट्रों के नियंत्रण के अधीन कर दिया। इस घटना ने भविष्यवाणी को ठीक-ठीक पूर्ण किया। जब यह ज्ञात हुआ, तब बहुतों को मिलर और उसके सहकर्मियों द्वारा अपनाए गए भविष्यवाणी-व्याख्या के सिद्धांतों की सत्यता का विश्वास हो गया, और आगमन-आन्दोलन को अद्भुत प्रेरणा मिली। विद्वान और प्रतिष्ठित पुरुष, उपदेश देने तथा उसके विचारों को प्रकाशित करने—दोनों में—मिलर के साथ सम्मिलित हो गए, और 1840 से 1844 तक यह कार्य तीव्रता से फैलता गया।” *The Great Controversy*, 334, 335.

लिच की भविष्यवाणी इस्लाम के विषय में थी, और स्नो की भविष्यवाणी बंद द्वार के विषय में थी। जब लिच की भविष्यवाणी पूरी हुई, तो वह कार्यपद्धति जिसके द्वारा संदेश स्थापित हुआ था, स्वीकार की गई; और जिन्होंने संदेश को स्वीकार किया, वे संदेशवाहक के साथ "एकीकृत" हो गए। भविष्यवाणी की पूर्ति में संदेश और संदेशवाहक, दोनों को मान्यता मिली। लिच की भविष्यवाणी इस्लाम के विषय में थी, और स्नो की भविष्यवाणी बंद द्वार के विषय में थी।

मैंने देखा कि परमेश्वर के लोग अपने प्रभु की प्रतीक्षा में हर्षित थे, उसे खोज रहे थे। परन्तु परमेश्वर का उद्देश्य उन्हें परखना था। उसके हाथ ने भविष्यवाणी के कालखंडों की गणना में हुई एक भूल को ढक रखा। जो अपने प्रभु की प्रतीक्षा कर रहे थे वे इस भूल को न पहचान सके, और समय का विरोध करने वाले बड़े से बड़े विद्वान भी इसे देख न पाए। परमेश्वर ने ठहराया था कि उसके लोग एक निराशा का सामना करें। समय बीत गया, और जो अपने उद्धारकर्ता की हर्षपूर्ण अपेक्षा में थे, वे उदास और निरुत्साहित हो गए; जबकि जिन्होंने यीशु के प्रकट होने से प्रेम नहीं किया था, पर भयवश संदेश को स्वीकार किया था, वे इस बात से प्रसन्न थे कि वह अपेक्षित समय पर नहीं आए। उनके अंगीकार ने न हृदय को छुआ था और न जीवन को शुद्ध किया था। समय का यूँ बीत जाना ऐसे हृदयों को प्रकट करने के लिए अत्यंत उपयुक्त था। वही लोग सबसे पहले मुड़कर उपहास करने लगे उन दुखी, निराश जनों का जो सचमुच अपने उद्धारकर्ता के प्रकट होने से प्रेम रखते थे। मैंने परमेश्वर की बुद्धि देखी कि वह अपने लोगों को परख रहा था और उन्हें ऐसी गहन परीक्षा दे रहा था जिससे यह पता चले कि कौन परीक्षा की घड़ी में घबराकर पीछे हट जाएगा।

यीशु और स्वर्ग की समस्त सेनाएँ उन लोगों की ओर सहानुभूति और प्रेम से देख रही थीं, जिन्होंने मधुर आशा के साथ उसे देखने की लालसा की थी जिसे उनकी आत्माएँ प्रेम करती थीं। परीक्षा की घड़ी में उन्हें संभालने के लिए स्वर्गदूत उनके चारों ओर मंडरा रहे थे। जिन्होंने स्वर्गीय संदेश को ग्रहण करने की अपेक्षा की थी, वे अंधकार में छोड़ दिए गए, और उनके विरुद्ध परमेश्वर का क्रोध भड़क उठा, क्योंकि वे उस प्रकाश को ग्रहण करने को तैयार न हुए जो उसने स्वर्ग से उन्हें भेजा था। वे विश्वासयोग्य, परन्तु निराश लोग, जो यह समझ नहीं पाए कि उनका प्रभु क्यों नहीं आया, अंधकार में नहीं छोड़े गए। उन्हें फिर उनकी बाइबलों की ओर भविष्यसूचक कालों की खोज करने के लिए मार्गदर्शित किया गया। गणनाओं पर से प्रभु का हाथ हटा लिया गया, और भूल स्पष्ट हो गई। उन्होंने देखा कि भविष्यसूचक काल 1844 तक पहुँचते थे, और यह भी कि वही प्रमाण, जो उन्होंने यह दिखाने के लिए प्रस्तुत किया था कि भविष्यसूचक काल 1843 में समाप्त होते थे, सिद्ध करता था कि वे 1844 में समाप्त होंगे। परमेश्वर के वचन से प्रकाश उनकी स्थिति पर चमका, और उन्होंने विलंब का एक समय पहचाना—'यद्यपि वह [दर्शन] विलंब करे, उसकी प्रतीक्षा करो।' मसीह के तत्काल आगमन के प्रति अपने प्रेम में, उन्होंने दर्शन के विलंब को नज़रअंदाज़ कर दिया था, जो सच्चे प्रतीक्षारत जनों को प्रकट करने के लिए ठहराया गया था। फिर उनके पास एक निश्चित समय था। तथापि मैंने देखा कि उनमें से बहुत से लोग अपनी गंभीर निराशा से ऊपर उठकर उस उत्साह और ऊर्जा के उस स्तर तक नहीं पहुँच पाए, जिसने 1843 में उनके विश्वास को चिह्नित किया था।

शैतान और उसके स्वर्गदूतों ने उन पर विजय पाई, और जो लोग संदेश को ग्रहण नहीं करना चाहते थे, उन्होंने उस 'भ्रम' को (जैसा कि वे उसे कहते थे) न स्वीकार करने में अपने दूरदर्शी निर्णय और बुद्धि पर स्वयं को बधाई दी। उन्हें यह एहसास नहीं था कि वे अपने ही विरुद्ध परमेश्वर के परामर्श को अस्वीकार कर रहे हैं और शैतान तथा उसके स्वर्गदूतों के साथ मिलकर परमेश्वर की उस प्रजा को उलझाने का काम कर रहे हैं, जो स्वर्ग-प्रेषित संदेश

को जी रही थी।

"इस संदेश के विश्वासियों पर कलीसियाओं में अत्याचार किया गया। कुछ समय तक जो लोग इस संदेश को स्वीकार नहीं करना चाहते थे, भय ने उन्हें अपने हृदय की भावनाओं के अनुसार आचरण करने से रोके रखा; परन्तु समय बीतने के साथ उनकी वास्तविक भावनाएँ प्रकट हो गईं। वे उस गवाही को मौन कर देना चाहते थे, जिसे प्रतीक्षा करने वाले यह कहने के लिए विवश महसूस करते थे कि भविष्यसूचक कालखंड 1844 तक विस्तृत थे। विश्वासियों ने स्पष्ट रूप से अपनी भूल समझाई और यह कारण बताए कि वे 1844 में अपने प्रभु के आने की आशा क्यों करते थे। उनके विरोधी प्रस्तुत किए गए प्रबल कारणों के विरुद्ध कोई तर्क नहीं ला सके। फिर भी कलीसियाओं का क्रोध भड़क उठा; उन्होंने निश्चय कर लिया कि वे प्रमाण नहीं सुनेंगे, और उस गवाही को कलीसियाओं से बाहर रखेंगे, ताकि अन्य लोग उसे न सुन सकें। जो लोग परमेश्वर द्वारा दी गई ज्योति को दूसरों से रोक रखने का साहस नहीं करते थे, उन्हें कलीसियाओं से बाहर कर दिया गया; परन्तु यीशु उनके साथ था, और वे उसके मुख की ज्योति में आनन्दित थे। वे दूसरे स्वर्गदूत के संदेश को ग्रहण करने के लिए तैयार थे।" प्रारंभिक लेखन, 235-237.

पतरस एक लाख चवालीस हज़ार का प्रतिनिधित्व करता है, जो, लिच के समान, इस्लाम और एक राज्य के अंत के विषय में एक संशोधित भविष्यवाणी प्रस्तुत करते हैं; और स्नो के समान, पतरस भी 'बन्द द्वार' के विषय में एक संशोधित भविष्यवाणी प्रस्तुत करता है। इस्लाम के 'दूसरे हाथ' के विषय में लिच का संदेश एक बाह्य भविष्यवाणी था, और 'बन्द द्वार' के संबंध में स्नो की भविष्यवाणी आंतरिक थी। स्नो के लिए कार्य तब आरम्भ हुआ जब प्रभु ने गणनाओं पर से अपना हाथ हटा लिया, और तब यह देखा गया कि वही प्रमाण, जिसे पूर्व में 1843 को सिद्ध करने वाला समझा गया था, वास्तव में 22 अक्टूबर, 1844 को सिद्ध करता था। लिच के लिए वह एक गणना थी, जो पूर्ण होने पर प्रकाशितवाक्य 10 के स्वर्गदूत को पृथ्वी और समुद्र पर खड़ा होने के लिए नीचे ले आई।

यह तथ्य कि लिच ने अपनी भविष्यवाणी की पूर्ति से दस दिन पहले उसे पुनर्गणित किया, पूर्ववर्ती भविष्यवाणी को सुधारने के कार्य को एक परीक्षा के रूप में चिह्नित करता है। क्या 1840 में आरंभ और 1844 में समापन वस्तुतः उस भविष्यवाणी का एक भविष्यसूचक प्रतीक है जो पुनर्गणित होकर सत्य मध्यरात्रि-आह्वान बन जाती है? क्या मिलेराइट इतिहास का अल्फ़ा और ओमेगा, जो मध्यरात्रि-आह्वान की उद्घोषणा पर समाप्त हुआ, वस्तुतः एक लाख चवालीस हज़ार के सत्य मध्यरात्रि-आह्वान के भविष्यसूचक लक्षणों की पूर्वछाया प्रस्तुत करता है?

सुधारित भविष्यवाणी की घोषणा के दोनों कालों में, मिलेराइट संदेश के विरुद्ध विवाद प्रकट हुआ, क्योंकि वह संदेश लोगों को व्याकुल करता था। जब पतरस कैसरिया फिलिप्पी में खड़ा है, तब उस संदेश के विषय में विवाद विद्यमान है जो कैसरिया फिलिप्पी से पूर्व ही आरम्भ हो चुका था, क्योंकि वही पूर्ति यह पुष्ट करती है कि मात्र पतरस के वचन पर ही वर्षा का संदेश बरसेगा। कैसरिया फिलिप्पी तूरियों के पर्व के समकक्ष है, और यह उस घटना के साथ सुसंगत है जब मसीह ने दो चेलों को, जो दूसरे स्वर्गदूत का प्रतिनिधित्व करते हैं, इस्लाम के बाँधे गधे को खोल देने के लिए भेजा। इस्लाम के गधे का बाँध खोला जाना एक्सेटर कैम्प मीटिंग में मध्यरात्रि की पुकार के संदेश की शुरुआत की घोषणा करता है, क्योंकि 13 अगस्त को, घोड़े पर सवार होकर एक दिन विलंब से पहुँचे सैमुअल स्नो—जो उद्घाटन-दिवस पर पहुँचने के बजाय ठहर गए थे—ने विलंब के समय का अंत और उस संदेश की शुरुआत को चिह्नित किया, जो 17 तारीख को सभा समाप्त होने पर ज्वारीय तरंग की भाँति आगे बढ़ाया गया।

मिलरवादी इतिहास का विवाद, राजा अहाब के आरोप, और जब मसीह यरूशलेम में प्रवेश कर रहे थे तब कुतर्की यहूदियों का प्रतिरोध—ये सब उस विवाद की पहचान करते हैं जिसकी परिणति तुरहियों के पर्व पर, जब गधा खोला जाता है, होती है। गधे का खोले जाना उस भविष्यवाणी की पुष्टि है जो प्रारम्भ में कैसरिया फिलिप्पी में एडवेंटिज़्म पर एक बंद दरवाज़े की, और कालावधि के अंत में कैसरिया मरितिमा में एक बंद दरवाज़े की, पहचान करती है। गधा, तीसरी हाथ के इस्लाम का प्रतीक है, जो संयुक्त राज्य अमेरिका पर—नैशविल, टेनेसी सहित—प्रहार करता है। 18 जुलाई, 2020 की असफल भविष्यवाणी अब क्रमशः सुधारी जा रही है, क्योंकि प्रभु अपना हाथ हटा रहे हैं और यीशु मसीह के प्रकाशितवाक्य को अनावृत कर रहे हैं। वह मुहर-उद्घाटन जुलाई 2023 में मरुभूमि में आरम्भ हुआ।

दानिय्येल अध्याय ग्यारह का दर्शन

तुरहियों का पर्व सातवीं तुरही का प्रतिनिधित्व करता है, जो तीसरा हाथ है, जो इस्लाम है। तुरही युद्ध के लिए एक बाह्य चेतावनी संदेश है, किन्तु इसे एक पवित्र सभा के लिए आंतरिक आह्वान के रूप में भी समझा जा सकता है। दूसरे मंदिर की परीक्षा के तीस दिन पूरे होने पर आरम्भ होने वाली कसौटी के रूप में, यह संदेश एक साथ बाह्य भी है और आंतरिक भी। प्रथम आधारभूत परीक्षा वर्ष 2024 के वसंत में आई, जब दानिय्येल 11:14 में निरूपित मसीह-विरोधी का बाह्य दर्शन प्रकट हुआ।

और उन समयों में बहुत-से लोग दक्षिण के राजा के विरुद्ध उठ खड़े होंगे; और तेरी प्रजा के लुटेरे भी दर्शन को स्थिर करने के लिए अपने आप को ऊँचा उठाएँगे; परन्तु वे गिर पड़ेंगे। दानिय्येल 11:14.

पूर्ववर्ती पद में पानियम का परिचय प्रस्तुत किया गया, और पानियम का साक्ष्य पंद्रहवें पद तक जारी रहता है।

क्योंकि उत्तर का राजा लौटेगा, और पहले की तुलना में अधिक बड़ी सेना खड़ी करेगा, और कुछ वर्षों के बाद वह बड़ी सेना और बहुत-सा धन-संपत्ति के साथ निश्चय ही आएगा। दानिय्येल 11:13.

पद दस से पंद्रह में 'उत्तर का राजा' पापसी की प्रतिनिधि शक्ति है, जिसका पद दस में प्रतिनिधित्व रोनाल्ड रीगन ने तब किया था जब लौह परदे की दीवार हटाई गई—जिसका प्रतिरूप 9 नवम्बर 1989 को बर्लिन की दीवार के पतन में प्रकट हुआ। पद सोलह रविवार-विधान में कलीसिया और राज्य के पृथक्करण की दीवार के हटाए जाने को चिह्नित करता है। पद ग्यारह और बारह 2014 में प्रारम्भ हुए यूक्रेन के युद्ध का प्रतिनिधित्व करते हैं, और पद तेरह 2024 के चुनाव की पहचान करता है, जब ट्रम्प—जो रीगन के बाद आठवाँ राष्ट्रपति है, और जो 'सात में से आठवाँ' भी है—अधिक सामर्थ्य के साथ 'लौटता' है; क्योंकि जब वह लौटेगा, तब वह 'पूर्ववर्ती से भी बड़ी सेना प्रस्तुत करेगा, और निश्चित वर्षों के बाद निश्चय ही आएगा'। 'निश्चित वर्ष' जो बाइडन के चार वर्ष हैं।

2024 के बाद, पद तेरह के अनुरूप, रोम पानियम के भविष्यवाणी संबंधी इतिहास में स्वयं को सम्मिलित करेगा। 8 मई, 2025 को आध्यात्मिक महिमामय देश से प्रथम पोप चुना गया और उसने लियो नाम चुना, जो अपने साथ अनेक महत्वपूर्ण भविष्यवाणी संबंधी विशेषताएँ लिए हुए है। तदुपरान्त पद पंद्रह में युद्ध आरंभ होता है।

तब उत्तर का राजा आएगा, और घेराबंदी का टीला बनाएगा, और सबसे दृढ़ गढ़वाले नगरों को ले लेगा; और दक्षिण की भुजाएँ उसका सामना न कर सकेंगी, न उसके चुने हुए लोग; और विरोध करने की कोई शक्ति न रहेगी। दानिय्येल 11:15.

पद पंद्रह में पानियम का युद्ध आरम्भ किया जाता है, और डोनाल्ड ट्रम्प द्वारा प्रतिनिधित्वित पृथ्वी का पशु दक्षिण के राज्य को पराजित करेगा। पद ग्यारह का दक्षिण का राजा यूक्रेन के साथ एक युद्ध आरम्भ करता है—वह यूक्रेन जो पापत्व की प्रतिनिधि शक्ति है—और जिसका वित्तपोषण तथा समर्थन पापत्व की ही पद दस में उल्लिखित प्रतिनिधि शक्ति—संयुक्त राज्य अमेरिका—ने किया। दक्षिण का राजा राफिया के युद्ध में विजयी होगा, परन्तु उस विजय के पश्चात वह प्रगतिशील विघटन, जो दक्षिण के किसी अजगर-राज्य के पतन के साथ सदैव सम्बद्ध रहता है, दक्षिण के राजा को अत्यन्त असुरक्षित स्थिति में छोड़ देता है, क्योंकि उत्तर का राजा पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली होकर लौटता है और पानियम के युद्ध की तैयारी करता है। 2014 में जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने यूक्रेनी युद्ध की पहल की, तब रूस और पुतिन ही दक्षिण का राजा थे। 2022 में आक्रमण आरम्भ हुआ और रक्त बहने लगा। 2024 में उत्तर का राजा लौट आया।

पतरस कैसरिया फिलिप्पी में है; यह आधी रात की पुकार के संदेश की उद्घोषणा का आरंभ है। पतरस, एलिय्याह के समान और लिच तथा स्नो द्वारा अभिव्यक्त मिलराइटों के समान, पूर्व में बंद द्वार और इस्लाम के विषय में एक भविष्यवाणी प्रस्तुत कर चुका है। उसकी पूर्ति सच्चे और मिथ्या उत्तरवृष्टि संबंधी संदेशों तथा सच्चे और मिथ्या संदेशवाहकों के बीच के भेद को प्रकट करती है। पतरस का संदेश नैशविल और इस्लाम का सुधारित संदेश है, और

जब वह कैसरिया फिलिप्पी में खड़ा है, तब वह पानियम पर खड़ा है, वह युद्ध जो पद सोलह के रविवार के क्रानून की ओर ले जाता है। पतरस की भविष्यवाणी की पूर्ति आधी रात की पुकार की उद्घोषणा की शुरुआत को चिन्हित करती है, जब इस्लाम मुक्त किया जाता है, जो कि रेखा पर रेखा वही समय है जब पानियम का युद्ध आ पहुँचता है।

दानियेल के दसवें अध्याय का दर्शन

तुरहियों का पर्व सातवीं तुरही का प्रतिनिधित्व करता है, जो तीसरा हाथ है, जो कि इस्लाम है। तुरही चेतावनी का संदेश है, और यह पवित्र सभा का आह्वान भी है। यह वह कसौटी भी है, जो तब आरम्भ होती है जब द्वितीय मन्दिर की परीक्षा के तीस दिन पूरे हो जाते हैं। विरोधी-मसीह का पहला आधारभूत बाह्य परीक्षात्मक दर्शन 2024 के वसंत में प्रकट हुआ, और मसीह का दूसरा आन्तरिक परीक्षात्मक दर्शन, जैसा कि दानियेल 10 में दर्शाया गया है, 2026 में प्रकट हुआ।

तब मैं ने अपनी आँखें उठाई और देखा; और देखो, एक पुरुष सन के वस्त्र पहिने हुए था, जिसकी कमर ऊफाज़ के उत्तम सोने से कसी हुई थी। उसका शरीर भी पुखराज के समान था, और उसका मुख बिजली के स्वरूप के समान, और उसकी आँखें आग के दीपकों के समान; और उसकी भुजाएँ और उसके पाँव रंग में चमकते पीतल के समान; और उसके वचनों की ध्वनि भीड़ की ध्वनि के समान थी।

और मैं दानियेल ही ने अकेले उस दर्शन को देखा; क्योंकि जो पुरुष मेरे साथ थे उन्होंने उस दर्शन को नहीं देखा; परन्तु उन पर बड़ी थरथराहट छा गई, इस कारण वे अपने को छिपाने के लिए भाग गए।

अतएव मैं अकेला रह गया, और मैंने यह महान दर्शन देखा, और मुझमें कोई शक्ति न रही; क्योंकि मेरी शोभा मुझमें भ्रष्टता में बदल गई, और मुझमें शक्ति शेष न रही।

तथापि मैंने उसके वचनों का शब्द सुना; और जब मैंने उसके वचनों का शब्द सुना, तब मैं अपने मुख के बल गहन निद्रा में पड़ गया, और मेरा मुख भूमि की ओर था।

और देखो, एक हाथ ने मुझे छुआ, और उसने मुझे मेरे घुटनों और हाथों की हथेलियों पर टिका दिया। और उसने मुझ से कहा, हे दानियेल, अत्यन्त प्रिय पुरुष, जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ, उन्हें समझ, और सीधा खड़ा हो; क्योंकि अब मैं तेरे पास भेजा गया हूँ। और जब उसने यह वचन मुझ से कहा, तब मैं काँपता हुआ खड़ा हो गया। तब उसने मुझ से कहा, मत डर, दानियेल; क्योंकि जिस पहले दिन से तू ने समझने का मन लगाया और अपने परमेश्वर के सम्मुख अपने आप को दीन किया, तेरे वचन सुन लिए गए, और मैं तेरे वचनों के कारण आ गया हूँ। परन्तु पारस के राज्य के प्रधान ने मुझे इक्कीस दिन तक रोकता रहा; तब, देख, मीखाएल, जो प्रधान सरदारों में से एक है, मेरी सहायता करने को आया; और मैं वहाँ पारस के राजाओं के साथ ठहरा रहा। अब मैं इसलिये आया हूँ कि तुझे यह समझा दूँ कि अन्तिम दिनों में तेरी प्रजा पर क्या बीतेगा; क्योंकि यह दर्शन अब भी बहुत दिनों के लिये है। और जब उसने ऐसे वचन मुझ से कहे, तब मैंने अपना मुख भूमि की ओर झुका लिया, और मैं मूक हो गया।

और देखो, मनुष्यों के पुत्रों के स्वरूप के सदृश एक ने मेरे होंठों को छुआ; तब मैंने अपना मुख खोला और बोलकर उससे कहा जो मेरे सामने खड़ा था, हे मेरे स्वामी, इस दर्शन के कारण मेरे दुःख मुझ पर आ पड़े हैं, और मुझ में कोई शक्ति नहीं रही। क्योंकि इस मेरे स्वामी का दास इस मेरे स्वामी से कैसे बातें कर सकता है? क्योंकि मुझ में तो तत्काल ही कोई शक्ति न रही, और श्वास भी मुझ में न रहा।

तब फिर एक, जो मनुष्य के रूप के समान था, आया और मुझे छू लिया, और उसने मुझे बल दिया; और कहा, 'हे अति प्रिय पुरुष, मत डर; तुझ पर शान्ति हो; बलवान हो, वरन् बलवान हो।' और जब उसने मुझ से यह कहा, तब मैं बल पा गया, और कहा, 'मेरे प्रभु बोलें, क्योंकि आपने मुझे बल दिया है।' दानियेल 10:5-19.

बाइसवें दिन दानिय्येल ने अन्तिम दिनों में स्वर्गीय महायाजक का दर्शन देखा। रोम द्वारा दर्शन की स्थापना का दर्शन 2024 का मूलभूत और अल्फा परीक्षण था, और मसीह का दर्शन मंदिर-परीक्षण है। यह उस वर्ग का पृथक्करण उत्पन्न करता है जो दानिय्येल से भागकर छिप जाते हैं। वह वर्ग झूठ और असत्य की आड़ में छिपता है, और इसी कारण उस पर प्रबल भ्रम आता है।

तत्पश्चात् दानिय्येल को तीन बार स्पर्श किया जाता है—पहली बार गब्रिएल द्वारा, फिर मसीह द्वारा, और तीसरी बार पुनः गब्रिएल द्वारा। अति पवित्र स्थान में, जब दानिय्येल को तीन बार स्पर्श किया जाता है, तो वह शक्तिवर्द्धन का चित्र प्रस्तुत करता है; क्योंकि यह इस प्रकार आरम्भ होता है कि दर्शन देखते समय उसमें कोई शक्ति नहीं रहती, परन्तु तीसरे स्पर्श तक वह अन्ततः सुदृढ़ कर दिया जाता है। उसे यह समझाने के लिए सामर्थ्य दिया जाता है कि अन्तिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर क्या घटेगा। अन्तिम दिनों में परमेश्वर की प्रजा पर जो घटित होगा, उसका भविष्यसूचक संदेश दस कुँवारियों के दृष्टान्त में निरूपित है।

दानिय्येल आरम्भ में निर्बल है, क्योंकि मसीह के दर्पणवत् दर्शन ने उसे निष्शक्त कर दिया था; परन्तु तीन बार स्पर्श किये जाने के अंत तक वह सुदृढ़ कर दिया जाता है, और “बलवन्त हो, हाँ, बलवन्त हो” की आज्ञा एक दोहराव है, जो दूसरे स्वर्गदूत अथवा दूसरी परीक्षा को चिह्नित करता है। दूसरी परीक्षा मंदिर-परीक्षा है, जहाँ परमेश्वर की प्रजा एक्सेटर शिविर-सभा के समाप्त होने पर आधी रात की पुकार का सन्देश घोषित करने के लिए सशक्त की जाती है। वही परीक्षा मंदिर-परीक्षा है, जहाँ वह शिला जो नींव और कोने का पत्थर थी, मंदिर का अद्भुत शिरोपत्थर बन जाती है, और इस प्रकार उसके पूर्ण होने का चिह्न लगता है। दानिय्येल बाइसवें दिन सुदृढ़ किया जाता है, जब वह विश्वास से महापवित्रस्थान में प्रवेश करता है। ऐसा करते ही गब्रिएल उसे स्पर्श करता है, फिर मसीह उसे स्पर्श करते हैं, और तब गब्रिएल पुनः उसे स्पर्श करता है। इस प्रकार दानिय्येल महापवित्रस्थान में सन्देश घोषित करने के लिए सुदृढ़ किया जाता है, जहाँ वह मसीह को दो स्वर्गदूतों के बीच देखता है; और महापवित्रस्थान में वह स्थान जहाँ मसीह मध्य में हैं, वही दया-आसन है, जिसके दोनों ओर आवरण करने वाले दो करूब हैं, जो उस वाचा के सन्दूक की ओर दृष्टि किये हैं, जो अपने सिंहासन पर विराजमान मसीह की शेखीना महिमा के प्रकाश से आलोकित है। दानिय्येल अध्याय दस का दर्शन भविष्यद्वाणाम्क रीति से इस प्रकार संयोजित है कि दानिय्येल दया-आसन के सिंहासन पर शेखीना के रूप में मसीह की महिमा का अवलोकन करता है, और उसी समय दो आच्छादक करूब सन्दूक में निहारते हैं।

तुरहियों के पर्व से पहले एल्याह यह दावा करता है कि वर्षा-संबंधी उसका संदेश ही प्रभु की ओर से आया हुआ एकमात्र संदेश है, और वह एक ऐसी भविष्यवाणी रखता है जिसकी परिणति एक ऐसे प्रदर्शन में होती है, जो यह सिद्ध करता है कि संदेशवाहक कौन है या कौन नहीं, और संदेश क्या है या क्या नहीं। कर्मेल से पूर्व के साढ़े तीन वर्षों तक राजा अहाब एल्याह को खोजता रहा, क्योंकि कर्मेल से पहले एक विवाद का कालखंड होता है। पर्वत कर्मेल तो केवल वह कसौटी है जहाँ चरित्र प्रकट होता है। मिलराइट इतिहास की समान अवधि में भी वही गवाही निहित थी, क्योंकि जिन्होंने संदेश से घृणा की, उन्होंने विश्वासयोग्यों को कलीसियाओं से बाहर कर दिया, और तत्पश्चात् विश्वासयोग्यों ने एक ऐसा संदेश उठाया जो लोगों को उस पतित पूर्व वाचा की प्रजा में से बाहर बुलाता था, जिन्हें छोड़कर आगे बढ़ा जा रहा था।

पतरस पिन्तेकुस्तीय रविवार-विधान के समय योएल का संदेश घोषित कर रहा है, अर्थात् पतरस वही संदेश उस समय घोषित कर रहा है जब एक्सेटर की शिविर-सभा के अंत में मध्यरात्रि की पुकार का काल आरम्भ होता है, जो तब आरम्भ हुआ जब पतरस की भविष्यवाणी का संशोधन उसी प्रकार किया गया जैसा स्नो और लिच के संदेशों का किया गया था। भविष्यवाणी की पूर्ति से पूर्व सदैव एक विवाद पूर्वगामी होता है। अतः वह विवाद भविष्यवाणी की पूर्ति से पहले ही आरम्भ होता है।

वह संदेश, जो अहाब, ईज़ेबेल और उसके भविष्यद्वक्ताओं, मसीह के दिनों के कुतर्की यहूदियों, तथा मिलराइट इतिहास के पतित प्रोटेस्टेंटों को व्याकुल करता है, उसे पतरस ‘योएल की पुस्तक’ के रूप में अभिहित करता है। गदहे का बन्धन खोले जाने से चिह्नित तीसरी लिटमस कसौटी से पूर्व, पतरस के संदेश पर लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म द्वारा

प्रहार किया जाता है, और पतरस उस प्रतिरोध के प्रत्युत्तर में यह स्पष्ट करता है कि संदेशवाहक मतवाले नहीं हैं; वे तो मात्र योएल के तीन अध्यायों की पूर्ति हैं। योएल के तीन अध्याय लाओदीकियाई एडवेंटिज़्म की कटु भर्त्सना से आरम्भ होते हैं। जब वह संदेश उन लोगों के कानों तक पहुँचेगा जो प्रबल मदिरा से मतवाले हैं, तो वे प्रतिक्रिया करेंगे। उन्होंने मसीह का सामना तब किया जब वह यरूशलेम को जाते हुए पर्वत से उतर रहे थे, और उन्होंने फिर यरूशलेम में भी उनका सामना किया।

गधा खोला गया, प्रवेश आरम्भ होता है; कुतर्क करने वाले यहूदी संदेश को मौन करा देना चाहते हैं। यीशु आगे बढ़ते हैं, फिर रुकते हैं और एडवेंटवाद के परिवीक्षा-काल के अंतिम दिन पर रोते हैं। तत्पश्चात् यरूशलेम में उन यहूदियों के साथ एक और सामना होता है, जो चाहते हैं कि लोग अपना संदेश देना बन्द कर दें। उस दिन जब सूर्य अस्त हुआ, यहूदी राष्ट्र के लिए परिवीक्षा-काल एक और चरण पर पहुँच गया। विरोध की यह प्रगति क्रूस पर मृत्यु तक जारी रहती है, और यह लाज़रुस के पुनरुत्थान के साथ ही गंभीर रूप से आरम्भ हुई, जिसने दूसरे स्वर्गदूत के आगमन और विलंबकाल को चिह्नित किया।

बैतनिय्याह यरूशलेम के इतने निकट था कि लाज़र के जी उठाए जाने का समाचार शीघ्र ही नगर तक पहुँच गया। उस चमत्कार के प्रत्यक्षदर्शी गुप्तचरों के द्वारा यहूदी शासक शीघ्र ही समस्त तथ्यों से अवगत हो गए। क्या किया जाना चाहिए, यह निर्णय करने के लिए सनहेद्रिन की सभा तत्काल बुलाई गई। मसीह ने अब मृत्यु और कब्र पर अपने अधिकार को पूर्णतः प्रकट कर दिया था। वह महान चमत्कार मनुष्यों को परमेश्वर द्वारा प्रदान किया गया सर्वोच्च प्रमाण था कि उसने उनके उद्धार के लिए अपने पुत्र को जगत में भेजा है। यह दैवी सामर्थ्य का ऐसा प्रदर्शन था जो तर्कबुद्धि और प्रबुद्ध विवेक के नियंत्रण में रहनेवाले प्रत्येक मन को आश्चर्य करने के लिए पर्याप्त था। लाज़र के पुनरुत्थान का दर्शन करनेवालों में से बहुतों ने यीशु पर विश्वास किया। परन्तु याजकों की उसके प्रति घृणा और भी तीव्र हो गई। उन्होंने उसके देवत्व के अन्य, अपेक्षाकृत छोटे प्रमाणों को अस्वीकार कर दिया था, और इस नये चमत्कार से वे केवल क्रोध से उग्र हो उठे। मरे हुए को दिन के पूरे उजाले में और गवाहों की भीड़ के सामने जीवित किया गया था। ऐसे प्रमाण का निराकरण किसी भी कुटिल उपाय से नहीं किया जा सकता था। इसी कारण याजकों की शत्रुता और भी घातक हो गई। वे पहले से कहीं अधिक इस बात पर अडिग हो गए कि मसीह के कार्य को रोका जाए।

सदूकी, यद्यपि मसीह के अनुकूल नहीं थे, तथापि उनमें उसके प्रति फरीसियों जितनी घोर दुर्भावना नहीं थी। उनकी घृणा इतनी कटु नहीं रही थी। पर अब वे पूरी तरह से भयभीत हो उठे थे। वे मरे हुए के पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते थे। तथाकथित विज्ञान का सहारा लेकर उन्होंने तर्क किया था कि किसी मृत देह का फिर से जीवित किया जाना असंभव है। पर मसीह के कुछ ही वचनों से उनका यह सिद्धान्त ध्वस्त हो गया था। यह प्रकट हो गया कि वे न तो शास्त्रों से परिचित थे और न ही परमेश्वर की सामर्थ्य से। वे चमत्कार से लोगों पर पड़े प्रभाव को मिटाने की कोई संभावना नहीं देख पा रहे थे। जो कब्र को उसके मृतकों से वंचित करने में विजयी सिद्ध हुआ, उससे लोगों को कैसे फेरा जा सकता था? झूठी खबरें प्रचलन में लाई गईं, पर चमत्कार से इनकार नहीं किया जा सकता था, और उसके प्रभाव को निष्प्रभाव कैसे किया जाए, यह वे जानते न थे। अब तक सदूकियों ने मसीह को मार डालने की योजना का समर्थन नहीं किया था। परन्तु लाज़र के पुनरुत्थान के बाद उन्होंने निश्चय कर लिया कि केवल उसकी मृत्यु से ही उनके विरुद्ध उसकी निर्भीक भर्त्सनाएँ रोकी जा सकती हैं। द डिज़ायर ऑफ़ एजेज़, 537.

लाज़र की मृत्यु ने उन चार दिनों की शुरुआत को चिह्नित किया जब यीशु ठहरे रहे। उसकी मृत्यु दूसरे स्वर्गदूत के आगमन का प्रतीक थी, जो विलंब-काल की शुरुआत को चिह्नित करता है। उसका पुनरुत्थान 31 दिसम्बर, 2023 को, 9/11 के बाइस वर्ष बाद, दो गवाहों के पुनरुत्थान को चिह्नित करता है। उसका पुनरुत्थान यहजेकेल की मृत सूखी हड्डियों के पुनरुत्थान को चिह्नित करता है। उसके पुनरुत्थान का पूर्वरूप आदम की सृष्टि थी, जो इस प्रकार थी कि मानवता, जिसका प्रतीक मिट्टी थी, को दिव्यता, जिसका प्रतीक जीवन की श्वास थी, के साथ संयोजित किया गया था।

यहूदियों के याजकों और शासकों को यीशु से घृणा थी; परन्तु असंख्य जन उनके ज्ञान के वचनों को सुनने और उनके सामर्थ्य के कार्यों को देखने के लिए उमड़ पड़ते थे। लोग गहनतम रुचि से उद्दीप्त थे और इस अद्भुत शिक्षक की शिक्षाएँ सुनने के लिए उत्सुकतापूर्वक यीशु का अनुसरण करते थे। बहुत से शासकों ने उस पर विश्वास किया, परन्तु इस भय से अपने विश्वास का अंगीकार करने का साहस न किया कि कहीं वे आराधनालय से निकाल न दिए जाएँ। याजकों और प्राचीनों ने निश्चय किया कि लोगों का ध्यान यीशु से हटाने के लिए कुछ न कुछ किया जाना चाहिए। उन्हें भय था कि सब मनुष्य उस पर विश्वास करेंगे। उन्हें अपने लिए कोई सुरक्षा दिखाई नहीं देती थी। या तो उन्हें अपना पद खोना होगा, या यीशु को मृत्यु के हवाले कर देना होगा। और यदि वे उसे मृत्यु के हवाले कर भी दें, तो भी उसकी सामर्थ्य के जीवित स्मारक बने रहने वाले लोग रहेंगे। यीशु ने लाज़र को मरे हुएों में से जिलाया था, और उन्हें यह भय था कि यदि वे यीशु को मार डालें, तो लाज़र उसकी महान सामर्थ्य की गवाही देगा। जो मरे हुएों में से जिलाया गया था उसे देखने के लिए लोग उमड़ रहे थे, और शासकों ने यह ठाना कि लाज़र को भी मार डालें और इस उत्तेजना को दबा दें। तब वे लोगों को मनुष्यों की परम्पराओं और सिद्धान्तों की ओर—यहाँ तक कि पुदीना और सुदाब का दशमांश देने की ओर—मोड़ देंगे, और फिर से उन पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेंगे। उन्होंने यह ठहराया कि यीशु को तब पकड़ा जाए जब वह अकेला हो; क्योंकि यदि वे उसे भीड़ में पकड़ने का प्रयत्न करें, जब लोगों का मन पूर्णतः उस पर लगा हुआ हो, तो वे पत्थरों से मारे जाएँगे। प्रारम्भिक लेखन, 165.

18 जुलाई, 2020 को प्रकाशितवाक्य के दो साक्षियों का वध कर दिया गया, और दूसरा स्वर्गदूत आ गया तथा विलंब का समय उपस्थित हो गया। 31 दिसंबर, 2023 को दो-चरणीय पुनरुत्थान-प्रक्रिया आरंभ हुई। पहला चरण नींव रखना था; दूसरा चरण उस नींव पर मन्दिर का निर्माण था। लाओदीकियाई सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट कलीसिया ने उस सन्देश से 1989 में उसके जन्म के समय से ही घृणा की है, और आज भी करती है। अब जबकि वे घृणित साक्षी, जिन्हें वे मरा हुआ समझते थे, फिर से जी उठे हैं; वे उस सन्देश से और भी अधिक घृणा करेंगे। वे 18 जुलाई, 2020 की भविष्यवाणी के विषय में उसी विषद्वेष के साथ वितर्क करेंगे, जैसा यहूदियों में लाज़रुस के पुनरुत्थान के प्रति था। मन्दिर-परीक्षा के इतिहास में, पतरस उनके मिथ्या आरोपों का उत्तर देने के लिए योएल की पुस्तक की ओर संकेत करेगा, जो उनकी सब झूठी बातों का उत्तर है।

हम इस अध्ययन को अगले लेख में जारी रखेंगे।